

आचार्यशान्तनवप्रणीतः फिट्सूत्रपाठः

| | अथ प्रथमः पादः | अनुवृत्तिः |
|-----|------------------------------------------|------------|
| 01. | <u>फिषोऽन्त उदात्तः ।</u> | 4.19 |
| 02. | पाटलापालङ्काम्बासागरार्थानाम् । | |
| 03. | गेहार्थानाम <u>स्त्रियाम्</u> । | 1.4 |
| 04. | गुदस्य च । | |
| 05. | ध्यपूर्वस्य स्त्रीविषयस्य । | |
| 06. | खान्तस्याश्मादेः । | |
| 07. | हिष्ठवत्सरतिशत्थान्तानाम् । | |
| 08. | <u>दक्षिणस्य</u> साधौ । | 1.10 |
| 09. | स्वाङ्गाख्यायामादिर्वा । | |
| 10. | <u>छन्दसि</u> च । | 1.12 |
| 11. | <u>कृष्णास्यामृगाख्या</u> चेत् । | 1.12 |
| 12. | <u>वा</u> नामधेयस्य । | 1.13 |
| 13. | शुक्लगौरयोरादिः । | |
| 14. | अङ्गुष्ठोदकबकवशानां <u>छन्दस्यन्तः</u> । | 1.15 |
| 15. | पृष्ठस्य च । | |
| 16. | अर्जुनस्य तृणाख्या चेत् । | |
| 17. | अर्यस्य स्वाम्याख्या चेत् । | |
| 18. | आशाया अदिगाख्या चेत् । | |
| 19. | <u>नक्षत्राणामाब्विषयाणाम्</u> । | 1.20 |
| 20. | न कुपूर्वस्य कृत्तिकाख्या चेत् । | |
| 21. | घृतादीनां च । | |
| 22. | ज्येष्ठकनिष्ठयोर्वयसि । | |
| 23. | बिल्वतिष्ययोः स्वरितो वा । | |

।। इति फिट्सूत्रेषु प्रथमः पादः ।।

| | | |
|--------|---|----------------|
| फिष् | = | प्रातिपदिकम् । |
| नब् | = | नपुंसकम् । |
| यमन्वा | = | वृद्धः |
| अष् | = | अच् । |
| शिट् | = | सर्वनाम । |
| स्फिग् | = | लुब् = लुप् । |

| | अथ द्वितीय पादः | अनुवृत्तिः |
|-----|----------------------------------------|------------|
| 01. | अथादिः★ प्राक्शकटेः। | 3.19 |
| 02. | ह्रस्वान्तस्य स्त्रीविषयस्य। | |
| 03. | नब्बिषयस्यानिसन्तस्य। | |
| 04. | तृणधान्यानां च द्व्यषाम्। | |
| 05. | त्रः संख्यायाः। | |
| 06. | स्वाङ्गशिटामदन्तानाम्। | |
| 07. | प्राणिनां कुपूर्वम्। | |
| 08. | खय्युवर्णं कृत्रिमाख्या चेत्। | |
| 09. | उनर्वन्नन्तानाम्। | |
| 10. | वर्णानां तणतिनितान्तानाम्। | |
| 11. | ह्रस्वान्तस्य ह्रस्वमनृत्ताच्छील्ये। | |
| 12. | अक्षस्यादेवनस्य। | |
| 13. | अर्धस्यासमद्योतने। | |
| 14. | पीतद्वर्थानाम्। | |
| 15. | ग्रामादीनां च। | |
| 16. | स्फिगन्तस्योपमेयनामधेयस्य। | 2.18, 2.17 |
| 17. | न वृक्षपर्वतविशेषव्याघ्रसिंहमहिषाणाम्। | |
| 18. | राजविशेषस्य यमन्वा चेत्। | |
| 19. | लघावन्ते द्वयोश्च बह्वषो गुरुः। | |
| 20. | स्त्रीविषयवर्णाक्षुपूर्वाणाम्। | |
| 21. | शकुनीनां च लघु पूर्वम्। | |
| 22. | नर्तु प्राण्याख्यायाम्। | |
| 23. | धान्यानां च वृद्धक्षान्तानाम्। | |
| 24. | जनपदशब्दानामषन्तानाम्। | 2.25 |
| 25. | हयादीनामसंयुक्तलान्तानामन्तः पूर्व वा। | |
| 26. | इगन्तानां च द्व्यषाम्। | |
| | ॥ इति फिट्सूत्रेषु द्वितीयः पादः ॥ | |
| | हय् = हल्। ★ 2.8, 2.21 वर्ज। | |

| | अथ तृतीयः पादः | अनुवृत्तिः |
|-----|-------------------------------------------------------------------------------------|------------|
| 01. | अथ <u>द्वितीयं</u> ★1 प्रागीषात् । | 3.17 |
| 02. | <u>त्र्यचां</u> प्राड् मकारात् । | 3.7 |
| 03. | स्वाङ्गानामकुर्वादीनाम् । | |
| 04. | मादीनां च । | |
| 05. | शादीनां शाकानाम् । | |
| 06. | पान्तानां गुर्वादीनाम् । | |
| 07. | युतान्यण्यन्तानाम् । | |
| 08. | मकरवरूढपारेवतवितस्तेक्ष्वार्जिदाक्षा - कलोमाकाष्ठापेष्ठाकाशीनामा <u>दिर्वा</u> । | 3.12 |
| 09. | छन्दसि च । | |
| 10. | कर्दमादीनां च । | |
| 11. | सुगन्धितेजनस्य ते वा । | |
| 12. | नपः फलान्तानाम् । | |
| 13. | यान्तस्या <u>न्त्यात्पूर्वम्</u> ★2 । | 3.15 |
| 14. | थान्तस्य च नालघुनी । | |
| 15. | शिशुमारोदुम्बरबलीवर्दोष्ट्रार- पुरूरवसां च । | |
| 16. | सांकाश्यकाम्पिल्यनासिक्यदावाघाटानाम् । | |
| 17. | ईषान्तस्य हयादेरा <u>दिर्वा</u> । | 3.19 |
| 18. | उशीरदाशेरकपालपलालशैवालश्यामाक- शारीरशरावहृदयहिरण्यारण्यापत्यदेवराणाम् । | |
| 19. | महिष्यषाढयोर्जायेष्टकाख्या चेत् । | |
| | ।। इति फिट्सूत्रेषु तृतीयः पादः ।। | |
| | ★1 = 3.13, 3.14 वर्जं । ★2 = 14 वर्जं । | |

| | अथ चतुर्थ पादः | अनुवृत्तिः |
|-----|---------------------------------------------------------|------------|
| 01. | शकटिशकट्योर <u>क्षरमक्षरं</u> पर्यायेण । | 4.5 |
| 02. | गोष्ठजस्य ब्राह्मणनामधेयस्य । | |
| 03. | पारावतस्योपोत्तमवर्जम् । | |
| 04. | धूम्रजानुमुंजकेशकालवाल स्थालीपाकानामधूजलस्थानाम् । | |
| 05. | कपिकेशहरिकेशयोश्छन्दसि । | |
| 06. | न्यङ्स्वरौ <u>स्वरितौ</u> । | 4.9 |
| 07. | न्यर्बुदव्यल्कशयोरादिः । | |
| 08. | तिल्यशिक्यकाश्मर्यधान्यकन्या- राजन्यमनुष्याणामन्तः । | 4.9 |
| 09. | बिल्वभक्ष्यवीर्याणि च्छन्दसि । | |
| 10. | त्वत्त्वसमसिमेत्यनुच्चानि । | |
| 11. | सिमस्याथर्वणेऽन्त उदात्तः । | |
| 12. | निपाता <u>आद्युदात्ताः</u> । | 4.13 |
| 13. | उपसर्गाश्चाभिवर्जम् । | |
| 14. | एवादीनामन्तः । | |
| 15. | वावादीनामुभावुदात्तौ । | |
| 16. | चादयोऽनुदात्ताः । | 4.17 |
| 17. | यथेति पादान्ते । | |
| 18. | प्रकारादिद्विरुक्तौ परस्यान्त उदात्तः । | 4.19 |
| 19. | शेषं सर्वमनुदात्तम् । | |
| | ॥ इति फिट्सूत्रेषु चतुर्थः पादः ॥ | |
| | ॥ इति आचार्यशान्तनवप्रणीतः फिट्सूत्रपाठः ॥ | |